

उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबाद

संगीत (गायन) (विषय कोड-25)

1. पारिभाषिक शब्दावली :

नाद, श्रुति, स्वर, ग्राम-मूर्छना, जाति, राग, ताल, तान, गमक, गांधर्व-गान, मार्ग-देशी, गीति, गान, वर्ण, अलंकार, मेलोडी, हार्मनी, स्वर-सप्तक, स्वर-अन्तराल, संवाद, विवाद, उपस्वर, पाश्चात्य एवं कर्नाटक पारिभाषिक शब्दावली एवं उनका वर्णन, स्वरित (तानपुरा), अल्पत्व-बहुत्व, आविर्भाव-तिरोभाव, कीर्तन, जातिस्वर, पद, स्वजाति, रागमालिका, तिल्लाना, न्यास, अंश पारिभाषिक शब्दावली, गीतिनाट्य, नृत्य-नाट्य, बैतालिक, वर्षा-मंगल, बसन्तोत्सव, गीतवितान, स्वर-वितान।

2. प्रयोगात्मक शास्त्र :

रागों का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन, रागों का वर्गीकरण ग्राम-राग वर्गीकरण, मेल-राग वर्गीकरण, राग-रागिनी वर्गीकरण, थाट-राग, वर्गीकरण एवं रागांग वर्गीकरण, रागों का समय-सिद्धान्त, भारतीय संगीत में मेलोडी एवं हार्मनी का प्रयोग, प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में श्रुतियों पर शुद्ध-विकृत स्वरों का स्थापना।

हिन्दुस्तान संगीत में प्रचलित तालों का विस्तृत ज्ञान, ताल के दस प्राणों, तालों का विस्तृत अध्ययन, विभिन्न लयकारियां-दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, बियाड़ एवं उनके क्रियात्मक प्रयोग सम्बन्धित विस्तृत जानकारी।

टैगोर द्वारा हिन्दुस्तानी राग-रागिनियों का प्रयोग, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तत्व, कर्नाटक संगीत, पाश्चात्य संगीत, विभिन्न प्रान्तों का संगीत, लोक संगीत और बंगाल का कीर्तन एवं टैगोर के राग-प्रयोगों में इनका प्रभाव।

3. गेय विधाएं तथा उनका क्रमिक विकास :

प्रबन्ध, ध्रुपद, ख्याल, धमार, तुमरी, टप्पा, तराना, चतुरंग, त्रिवट, वृन्द-गान, वृन्द-वादन, जावली, कृति, तिल्लाना, आलाप, वर्णम् (पद-वर्णम् एवं तान-वर्णम्) पदम, रागम्, तानम्, पल्लवी, गीत, वर्ण, स्वरजाति, कल्पित, संगीत, राग-मालिका, नेरावल, स्वर-कल्पना (मनोधर्म संगीत), तेवरम्, दिव्यप्रबन्धम्, तिरुप्रूगज।

रवीन्द्र संगीत की मुख्य विधाएं।

बंगाल का सांगीतिक इतिहास।

4. घराना और बाज :

हिन्दुस्तानी संगीत में घराना का उद्गम और विकास एवं पारस्परिक हिन्दुस्तानी संगीत की प्रगति तथा संरक्षण में घरानों का सहयोग। घराना पद्धति के गुण-दोष।

कण्ठ, वादन और अवनद्य के प्रमुख घरानों का अध्ययन। वर्तमान संगीत में घरानों की आवश्यकता तथा संभावनाएं।

कर्नाटक संगीत की गायन और वादन की विभिन्न शैलियां और गुरु-शिष्य परम्परा।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के सांगीतिक सृजन का सम्पूर्ण सर्वेक्षण; टैगोर की सांगीतिक रचनाओं की स्वरात्मक एवं लयात्मक विविधताएं (उनके निजी प्रयोगात्मक विविधताओं सहित)।

टैगोर के परिवार का सांस्कृतिक वातावरण (पथूरीयाघाट एवं जोरासांको, कलकत्ता), टैगोर संगीत की विषयपरक विविधताएं (पूजा, स्वदेश, प्रेम, प्रकृति, विचित्र, अनुष्ठानिक)।

5. **भारतीय संगीत के शास्त्रज्ञों का योगदान एवं उनकी शास्त्रात्मक परम्परा :**
 नारद, भरत, दत्तिल, मतंग, शारंगदेव, नान्यदेव एवं अन्य। लोचन, रामामात्य, पुंडरीक विटठल, सोमनाथ, दामोदर मिश्र, अहोबल, हृदयनारायण देव, व्यंकटमुखी, श्रीनिवास, पं० भातखण्डे, पं० डी०वी० पलुस्कर, पं० ओमकारनाथ ठाकुर, के०सी०डी० वृहस्पति, डा० प्रेमलता शर्मा।
 अवनद्य वाद्य सम्बन्धित प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक ग्रंथों—भरत नाटयशास्त्र, संगीत समयसार, राधागोविन्द संगीत सार।
 मध्य एवं आधुनिककाल के कर्नाटक संगीत के प्रमुख शास्त्रज्ञों, रचनाकारों एवं मंचप्रदर्शक कलाकारों का योगदान। रामामात्य, व्यंकटमुखी, त्यागराज, मुत्थूस्वामी दीक्षितर, श्याम शास्त्री, गोपाल कृष्ण भारती, प्रोफेसर सम्बामूर्ति, पापानसम् शिवन, बसन्त कुमारी, सुब्बालक्ष्मी, रामरी, टी०एन० कृष्णन एवं अन्य।
6. **संभूत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में :**
 प्राचीन, मध्य एवं आधुनिककाल में हिन्दुस्तानी संगीत (कंठ) कर्नाटक, संगीत, रवीन्द्र संगीत का ऐतिहासिक विकास।
 पाश्चात्य शास्त्रों का भारतीय संगीत में योगदान।
7. **सौन्दर्यशास्त्र :**
 सौन्दर्यशास्त्र का उद्गम, अभिव्यक्ति और परख; सौन्दर्यशास्त्र के सिद्धान्त एवं भारतीय संगीत से सम्बन्ध।
 रस सिद्धान्त एवं भारतीय संगीत में इसका प्रयोग।
 हिन्दुस्तानी संगीत (काण्ठ), कर्नाटक संगीत एवं रवीन्द्र संगीत का सांगीतिक सौन्दर्य शास्त्र तथा रस से सम्बन्ध।
 राग—रागिनी चित्रों, राग ध्यान इत्यादि के विशेष सन्दर्भ में ललितकलाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन।
8. **वाद्य :**
 हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य (गायन) उनकी उत्पत्ति, विकास तथा उनके सुप्रसिद्ध कलाकार। तानपुरा तथा उसके उपस्वरों का महत्व।
 भारतीय नृत्यों की सामान्य जानकारी: कथक, भरतनाट्यम, कुचीपुडी, उड़ीसी, कथकलि आदि।
9. **लोक संगीत :**
 भारतीय संगीत पर लोक संगीत का प्रभाव। लोक संगीत का रागों में शैलीगत परिवर्तन।
 रवीन्द्र संगीत, हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत की सुप्रसिद्ध लोक धुनें एवं लोक नृत्य यथा: बाउल, भटियाली, लावनी, गरबा, कजरी, चैती, भांड, भांगड़ा, गिद्दा, झूमर, स्वांग, पण्डवानी, आमार प्राण मानुष आछे प्राण, आमार शोनार बांगला, कीर्तन, सारी, राय, बेशे, झूमर, करकट्टम्, कवाड़ीअट्टम्, विल्लुपोट्टु, मयण्डीमेलम् तथा अन्य प्रसिद्ध लोक विधाएं।

हिन्दुस्तानी लोक संगीत, कर्नाटक लोक गीत अथवा दक्षिणी लोक संगीत तथा रवीन्द्र संगीत अथवा बंगाल के लोक संगीत में एक दूसरे को प्रभावित करने वाले कारकों एवं तत्वों का विश्लेषण।

भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत का सामान्य अध्ययन: उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, बंगाल आदि तथा दक्षिणी भारत का लोक संगीत।

10. संगीत शिक्षण एवं शोध तकनीक :

निम्न रागों का विस्तृत अध्ययन—भैरव, यमन, भैरवी, खमाज, बिहाग, अहिर भैरव, नटभैरव, पूरिया, मारवा, सोहनी, बसंत परज, जोग, मारुबिहाग, पूरिया कल्याण, भीमपलासी, जौनपुरी, तोड़ी, मुल्तानी, दरबारी, अड़ाना, मियांमल्हार, बहार।

गुरु—शिष्य परम्परा, संगीत सम्प्रदाय प्रदर्शिनी, हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत के संदर्भ में विद्यालयीन संगीत शिक्षण।

हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत शिक्षण के संदर्भ में इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों एवं शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली सहायक सामग्री की प्रयोगात्मकता।

संगीत में संगीतात्मकता शोध के अन्तर्गत संक्षेपिका, सामग्री संकलन।

शास्त्रात्मक तथा मौखिक परम्परा का संगीत में अन्तःसम्बन्ध।

निर्देश— पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उपरोक्त 10 यूनिट सम्मिलित होंगे। प्रत्येक यूनिट से न्यूनतम 5 प्रश्न अनिवार्य होंगे।

U.P. HIGHER EDUCATION SERVICES COMMISSION, ALLAHABAD

MUSIC (VOCAL) (Subject Code-25)

1. Technical–Terminology :

Nada, Shruti, Swara, Grama-Moorchana, Jati, Raga, Tala, Tan, Gamak, Gandharva-Gaan, Marga-Deshi, Giti, Gaan, Varna, Alankar, Melody, Harmony, Musical Scales, Musical intervals, Consonance-Dissonance, Harmonics. Western and South Indian terminology and their explanation, Drone, Alpatva-Bahutva, Abirbhav-Tirobhav, Kirtana, Jatiswara, Pada, Swarjati, Ragmalika, Tillana, Nyasa, Ansa, Gitinatya, Nritya-Natya, Baitalik, Varsha-Mangal, Basantotsav, Gita-Bitana, Swara-Bitana,

2. Applied Theory :

Detailed and critical study of Ragas, classification of Ragas, i.e., Grama Raga vargikaran, Mela Raga Vargikaran, Raga-Ragini Vargikaran, Thata Raga Vargikaran, and Raganga Vargikaran, time-theory of Ragas, Application of melody and harmony in Indian Music, Placement of Shuddha and Vikrit Swaras on Shruties in ancient, medieval and modern period. Detailed knowledge of prevalent talas of Hindustani music, knowledge of tala Dashpranas and tala, detailed study of different layakarīs viz, Dugun, Tigun, Chaugun, Ada, Kuada, Viyada and method to apply them in compositions.

Tagore's treatment of Hindustani ragas and raginis, elements of Hindustani classical music, Karnatak music, Western Music, Music from other provinces, folk music and Kirtan of Bengal and their influence on Tagore's treatment of ragas.

3. Compositional Forms and their Evolution :

Prabandha, Dhrupad, Khyal, Dhamar, Thumri, Tappa, Tarana, Chaturang, Trivat, Vrindagana, Vrinda Vadan, Javeli, Kriti, Tillana, Alap, Varnam (Pad Varnam and Tana Varnam), Padam, Ragam, Tanam, Pallavi, Gita, Varna, Swarajati, Kalpita, Sangita, Ragamalika, Narvallu, Swara Kalpana (Manodharma Sangeet), Tevaram, Divyaprabandham, Tiruppugazh.

Main Forms of Rabindra Sangeet.

History of Music of Bengal.

4. Gharanas and Gayaki :

Origin and Development of Gharanas in Hindustani Music and their contribution in preserving and promoting traditional Hindustani Classical Music. Merits and demerits of Gharana System.

Origin and Development of Gharanas and their contribution in promoting traditional Indian Classical Music, merits and demerits of Gharana system.

Study of the traditions and specialities of different gharanas in vocal, instrumental and percussion group. Desirability and possibility of gharanas in contemporary music.

Guru Shishya parampara and different styles of singing and playing in Karnatak Music.

An overall survey of Rabindra Nath Tagore's musical creativity, tonal and rhythmic varieties of Tagore's musical compositions including his own experimental variations. Periods and phases of Tagore's musical compositions (Chronological order may be maintained)

The Cultural atmosphere of Tagore's family (Pathuriaghata and Jorasanko, Calcutta) Thematic variations of Tagore's Music: (Puja, Swadesh, Prem, Prakriti, Vichitra, Anusthanik).

5. Contribution of Scholars to Indian Music and their textual tradition :

Narad, Bharat, Dattil, Matanga, Sharangadeva, Nanyadeva and others. Lochan, Ramamatya, Pundarik Vitthal, Somnath, Damodar Mishra, Ahobal, Hridaya Narain Deva, Vynkatmakhi, Srinivas, Pt. Bhatkhande, Pt. V. D. Paluskar, Pt. Omkarnath Thakur, K. C. D. Brahaspati, Dr. Premlata Sharma and others.

Study of ancient, medieval and modern treatises in like Bharat Natyashastra, Sangeet Samaysar, Radha Govind Sangit Sar

Contribution of prominent Karnatak Scholars, composers and performers and their medieval and modern period like, work such as Ramamatya, Vyankatmakhi, Tyagraja, Muttu-Swami Dikshitara, Shyama Sastri, Gopal Krishna Bharati, Prof. Sambhamoorti, Papanasam Shivan, Vasantha Kumari, Subbulakshmi, Ramari, T. N. Krishnari and others.

6. Historical Perspective of Music :

A study of the historical development of Hindustani music (Vocal), Karnatak Music and Rabindra Sangeet in ancient, medieval and modern period.

Contribution of Western Scholars to Indian Music.

7. Aesthetics :

Its origin, Expression and Appreciation : Principle of aesthetics and its relation to Indian Music.

Rasa theory and its application to Indian Music.

Relationship of Musical aesthetics and Rasa to Hindustani Music (Vocal), Karnatak Music and Rabindra Sangeet.

Interrelationship of Fine Arts with special reference to Rag – Ragini Paintings, Dhyana of Ragas and others.

8. Instruments / Dance :

Origin, evolution, structure of various instruments and their well – known exponents of Hindustani (Vocal), Karnatak Music and Rabindra Sangeet. Importance of Tanpura and its Harmonics.

Elementary knowledge of Indian dances like Kathak, Bharatnatyam, Kuchipudi, Oddissi, Kathakali etc.

9. Folk Music :

Influence of folk music on Indian Classical Music. Stylisation of folk melodies into ragas. Popular folk tunes and folk dances of Hindustani, Karnatak and Rabindra Sangeet, such as Baul, Bhatiyali, Lavani, Garba, Kajri, Chaity, Maand, Bhangra, Gidda, Jhoomar, Swang, Pandawani, Amar – Praner Manush Acchhe Prane, Amar Sonar Bangla, Kirtan, Sari, Rai Beshe, Jhumur, Karakattam, Kavadi Attam, Villuppattu, Maiyandi Melam and other prominent folk forms.

Analysis of the elements of Hindustani folk music, Karnatak folk music or South Indian folk music and Rabindra folk Sangeet or folk music of Bengal and the elements regarding their interrelationship.

General Study of the Folk Music of various regions of India like Uttar Pradesh, Rajasthan, Haryana, Punjab, Maharashtra, Gujrat, Chhattisgarh, Madhya Pradesh, Bengal and South India.

10. Music Teaching and Research Technologies :

Bhairav, Yaman, Bhairvi, Khamaj, Bihag, Ahir-Bhairvi, Nat Bhairvi, Pooriya, Marwa, Sohani, Basant, Paraj, Jog, Maroo Bihag, Pooriya Kalyan, Bheempalari, Jaunpuri, Todi, Multani, Darbari, Adana, Miyan Malhar, Bahar.

Guru Shishya Parampara, Sangeet – Sampradaya Pradarsini and the institutional system of music teaching with reference to Hindustani, Karnatak Music and Rabindra Sangeet.

Utility of teaching aids like electronic equipments in music education with reference to Hindustani, Karnatak music and Rabindra Sangeet.
The methodologies of music research, preparing synopsis, data collection.
Study of interrelation between textual and oral tradition.